डॉ. विजय कुमार उपाध्याय

बृहत्संहिता में वर्णित भूमिगत जल की खोज की विधियाँ

दकार्गलाध्याय में वर्णित भूमिगत जल की खोज की विधियाँ भू-वनस्पति (जियोबोटनी) से संबंधित हैं अर्थात किसी क्षेत्र में वनस्पति के प्रकार को देखकर भूमिगत जल (ग्राउंड वाटर) की उपस्थिति, जलस्तर की गहराई तथा जल के स्वाद का अनुमान लगाया गया है। इस विषय पर बृहत्संहिता में अनेक प्रकार के पेड़-पौधों के साथ भूमिगत जल के संबंध की चर्चा विस्तारपूर्वक की गयी है। वस्तुतः दकार्गलाध्याय आधुनिक भूवैज्ञानिकों के लिये कौतूहल एंव गहन शोध के विषय हैं।

भारत के प्राचीच ग्रंथों में एक प्रमुख नाम है 'बृहत्संहिता' जिसके रचयिता थे आचार्य वराहमिहिर जो अपने समय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक माने जाते थे। उनका जन्म सन् 505 में मगध क्षेत्र में हुआ था। उनके पिता का नाम आदित्य दास था जो अपने समय के जाने-माने ज्योतिषी थे। वराहमिहिर ने अपने पिता से ही ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था। कुछ समय बाद वे जीविकोपार्जन हेतु उज्जैन चले गये। उज्जैन में ही रह कर उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की जिनमें सर्वप्रथम है 'बृहत्संहिता'। इस ग्रंथ में विज्ञान संबंधी अनेक विषयों की चर्चा विस्तारपूर्वक की गयी है। इन्हीं विषयों में एक प्रमुख विषय है 'भूमिगत जल की खोज' जिसे बृहत्संहिता के दकार्गलाध्याय में वर्णित किया गया है।

दकार्गलाध्याय में वर्णित भूमिगत जल की खोज की विधियाँ भू-वनस्पति (जियोबोटनी) से संबंधित हैं अर्थात किसी क्षेत्र में वनस्पति के प्रकार को देखकर भूमिगत जल (ग्राउंड वाटर) की उपस्थिति, जलस्तर की गहराई तथा जल के स्वाद का अनुमान लगाया गया है। इस विषय पर बृहत्संहिता में अनेक प्रकार के पेड़-पौधों के साथ भूमिगत जल के संबंध की चर्चा विस्तारपूर्वक की गयी है। वस्तुतः दकार्गलाध्याय आधुनिक भूवैज्ञानिकों के लिये कौतूहल एंव गहन शोध के विषय हैं।

दकार्गलाध्याय में श्लोकों की कुल संख्या 124 है। ये सभी श्लोक किसी न किसी रूप में भूमिगत जल के अन्वेषण एंव उसके प्रबंधन से जुड़े हुए हैं। इस अध्याय के श्लोक संख्या छः एंव सात में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर बेतस (बेंत) का पौधा उपस्थित पाया जाय तो उस पौधे से तीन हाथ पश्चिम डेढ़ पुरूष (कोई व्यक्ति खड़ा होकर जब अपने दोनों हाथ कंधे के ऊपर खड़ा करे तो उस स्थिति में उसकी पूरी ऊँचाई को एक पुरूष कहा जाता है जो लगभग सात फीट के बराबर होता है) की गहराई पर जल की पश्चिमवर्त्ती शिरा मिलेगी। इस अध्याय के श्लोक संख्या 8 में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर जामुन का पेड़ मौजूद हो तो उससे तीन हाथ उत्तर दो पुरूष की गहराई पर जल की पूर्व वाहिनी शिरा प्राप्त होगी। यदि जामुन के वृक्ष से पूरब निकट में ही दीमक की बाम्बी हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण दो पुरूष की गहराई पर मधुर जल प्राप्त होगा। इस अध्याय के ग्यारहवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर गूलर का वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम ढाई पुरूष

की गहराई पर मधुर जल की शिरा प्राप्त होगी। इस अध्याय के 12वें एंव 13वें श्लोक में बताया गया है कि यदि अर्जन वृक्ष से तीन हाथ उत्तर दीमक की बाम्बी मौजूद हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम साढ़े तीन पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है।

दकार्गलाध्याय के 14वें एंव 15वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर बाम्बीयुक्त निर्गुण्डी (सिंधुआर) दिखायी पड़े तो उससे तीन हाथ दक्षिण सवा दो पुरूष की गहराई पर जल का काफी बड़ा भंडार मिलता है। सोलहवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर बेर का वृक्ष हो तथा उससे पूरब वल्मीक हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम तीन पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। सत्रहवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर पलाष तथा बेर के वृक्ष एक दूसरे से सटे दिखायी पड़ें तो उससे तीन हाथ पश्चिम सवा तीन पुरूष की गहराई पर पर्याप्त पानी मिलता है। अठारहवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर बेल और गूलर के वृक्ष एक दूसरे से सटे दिखायी दें तो उससे तीन हाथ दक्षिण तीन पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। उन्नीसवें तथा बीसवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर काकोदुम्बरिका (कठुम्बरी या जंगली गूलर) वृक्ष के निकट वल्मीक हो तो उस वल्मीक से सवा तीन पुरूष की गहराई पर जल की पश्चिमवर्ती शिरा पायी जाती है।

दकार्गलाध्याय के 21वें तथा 22वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर कपिल (कबीला) वृक्ष दिखायी पड़े तो उससे तीन हाथ पूरब सवा तीन पुरूष की गहराई पर खारे पानी की दक्षिणवर्ती शिरा मिलती है। 23वें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर शोणाक (सरिवन) वृक्ष दिखायी दे तो उससे दो हाथ वायव्य

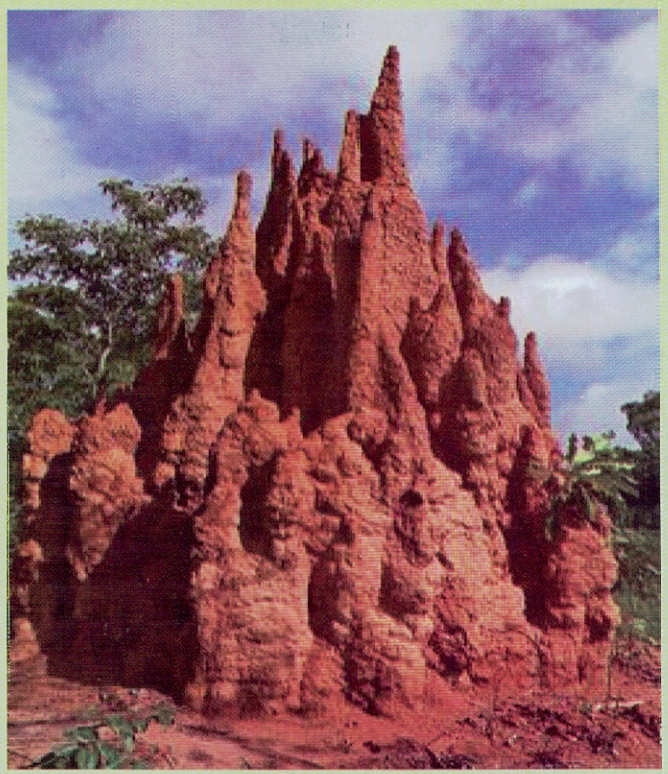

बाम्बीयुक्त निर्गुण्डी से तीन हाथ दक्षिण सवा दो पुरूष की गहराई पर जल भण्डार मिलता है।

दिशा में तीन पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। चौबीसवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर विभीतक (बहेड़ा) वृक्ष के निकट दक्षिण दिशा में वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से दो हाथ पूरब डेढ़ पुरूष की गहराई पर पानी मिलता है। इस अध्याय के पच्चीसवें तथा छब्बीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर बहेड़े के वृक्ष से पश्चिम वल्मीक हो तो उस वृक्ष से उत्तर साढ़े चार पुरूष की गहराई पर पानी की पश्चिमवर्ती शिरा मिलती है, परन्तु यह शिरा तीन वर्ष बाद सूख जाती है। सत्ताइसवें एंव अट्ठाइसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर कोविदारक (छितवन या सप्तर्णी) वृक्ष से ईशान कोण में कुशायुक्त श्वेत वल्मीक मौजूद हो तो सप्तपर्णी वृक्ष तथा वल्मीक के बीच साढ़े पाँच पुरूष की गहराई पर काफी परिमाण में जल प्राप्त होता है। उनतीसवें तथा तीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि वल्मीक से युक्त सप्तपर्णी किसी स्थान पर हो तो उससे एक हाथ उत्तर पाँच पुरूष की गहराई पर मधुर जल की उत्तर वाहिनी शिरा मिलती है।

दकार्गलाध्याय के इकतीसवें तथा बत्तीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी वृक्ष के मूल में मेंढक दिखायी दे तो उस वृक्ष से एक हाथ उत्तर साढ़े चार पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। तेंतीसवें तथा चौतीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर करंजक (कंरस) वृक्ष के दक्षिण में वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण तीन पुरूष की गहराई पर जल की उत्तरवाहिनी शिरा प्राप्त होती है। पैंतीसवें तथा छत्तीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर महुए के वृक्ष से उत्तर वल्मीक हो तो उस वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम साढ़े आठ पुरूष की गहराई पर जल की पूर्ववाहनी शिरा प्राप्त होती है। सैंतीसवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर तिलक (ताल मखाना) के वृक्ष से दक्षिण कुशा और दूब से युक्त वल्मीक हो तो उस वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम पाँच पुरूष की गहराई पर जल की पूर्व वाहिनी शिरा प्राप्त होती है। अड़तीसवें एवं उनतालीसवें श्लोंको में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर कदम्ब वृक्ष से पश्चिम में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ दक्षिण पौने छः पुरूष की गहराई पर जल की उत्तर वाहिनी शिरा मिलती है। चालीसवें श्लोक में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर वल्मीक से युक्त ताड़ या नारियल का वृक्ष हो तो इस वृक्ष से छः हाथ पश्चिम चार पुरूष की गहराई पर जल की दक्षिण वाहिनी शिरा पायी जाती है।

दकार्गलाध्याय के इकतीसवें तथा बत्तीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी वृक्ष के मूल में मेंढक दिखायी दे तो उस वृक्ष से एक हाथ उत्तर साढ़े चार पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। तेंतीसवें तथा चौतीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर करंजक (कंरस) वृक्ष के दक्षिण में वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण तीन पुरूष की गहराई पर जल की उत्तरवाहिनी शिरा प्राप्त होती है। पैंतीसवें तथा छत्तीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर महुए के वृक्ष से उत्तर वल्मीक हो तो उस वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम साढ़े आठ पुरूष की गहराई पर जल की पूर्ववाहनी शिरा प्राप्त होती है।

दकार्गलाध्याय के इकतालीसवें एंव बयालीसवें श्लाकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर कपित्थ (कैथ) के वृक्ष से दक्षिण वल्मीक हो तो उस वृक्ष से सात हाथ उत्तर पाँच पुरूष की गहराई पर जल की एक पश्चिम वाहिनी शिरा और एक उत्तर वाहिनी शिरा प्राप्त होती है। तैतांलीसवें तथा चौवालीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि अश्मन्तक वृक्ष के बायें तरफ बेर का वृक्ष या वल्मीक हो तो उस वृक्ष से छः हाथ उत्तर साढ़े तीन पुरूष की गहराई पर जल की दक्षिण वाहिनी शिरा और ईशान वाहिनी शिरा मिलती है। पैतालीसवें एंव छयालीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर हरिद्र (हलदुआ) के निकट वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ पूरब सवा पाँच पुरूष की गहराई पर जल की पश्चिम वाहिनी तथा दक्षिण वाहिनी शिरायें मिलती हैं। सैंतालीसवें एंव अड़तालीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर वीरण (गाँडर) तथा दूब अधिक कोमल हो तो वहाँ एक पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। उनचासवें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ निर्मल लम्बी डालियों से युक्त छोटे-छोटे वृक्ष फैले हुए हों वहाँ भूमिगत जल कम गहराई पर ही मिल जाता है, परन्तु जहाँ विवर्ण पत्तेवाले रूख वृक्ष हो वहाँ जल उपलब्धता की संभावना कम रहती हैं।

50वें तथा 51वें श्लोकों में बताया गया है कि जहाँ निर्मल वल्मीक से युक्त आम्रांतक (अम्बाड़ा), वरूणक (वरण), भिलावा, बेल, तेन्दु, अंकोल, पिण्डोर, शिरीष, अंजून, परूपक (फालसा), अशोक, ये वृक्ष हों, वहाँ इन वृक्षों से तीन हाथ उत्तर दिशा में साढ़े चार पुरूष नीचे जल मौजूद होता है। 52वें श्लोक में बताया गया है कि यदि तृंण रहित प्रदेश में कोई एक स्थान तृणयुक्त दिखाई दे अथवा तृणयुक्त प्रदेश में कोई एक स्थान तृण रहित दिखायी दे तो उस स्थान में साढ़े चार पुरूष नीचे पानी की शिरा मिलती है। 53वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ काँटे वाले वृक्षों में एक बिना काँटेवाला वृक्ष हो वहाँ उस वृक्ष से तीन हाथ पश्चिम दिशा में एक तिहाईयुक्त तीन पुरूष नीचे जल प्राप्त होता है। 54वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ जमीन को पाँव से मारने पर गंभीर शब्द सुनायी पड़े वहाँ साढ़े तीन पुरूष नीचे जल की उत्तर वाहिनी शिरा प्राप्त होती है। 55वें श्लोक में बताया गया है कि वृक्ष की एक शाखा नीचे की ओर झुकी हुई हो या पीली पड़ गयी हो तो उस शाखा के नीचे तीन पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 56वें श्लोक में बताया गया है कि जिस वृक्ष के फल तथा पुष्पों में विकार पैदा हो गया हो उस वृक्ष से तीन हाथ की दूरी पर पूरब दिशा में चार पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 57वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ काँटों से रहित और सफेद पुष्पों से युक्त कटेरी का वृक्ष दिखाई दे, उस वृक्ष के नीचे साढ़े तीन पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 58वें श्लोक में बताया गया है कि जिस जल रहित देश में दो सिर वाला खजूर का वृक्ष दिखाई दे, वहाँ उस वृक्ष से दो हाथ पश्चिम दिशा में तीन पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 59वें श्लोक में बताया गया है कि यदि सफेद पुष्प वाला कर्णिकार (कठचम्पा) या ढाक का वृक्ष हो तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण दिशा में दो पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 60वें श्लोक में बताया गया है कि जिस स्थान पर जमीन के भीतर से भाप निकलता दिखाई दे वहाँ दो पुरूष नीचे प्रचुर जलवाली शिरा मिलती है।

61वें श्लोक में बताया गया है कि जिस खेत में धान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाय, बहुत निर्मल धान हो तथा उत्पन्न होकर पीला पड़ जाय वहाँ दो पुरूष नीचे प्रचुर जलवाली शिरा मिलती है। 62वें श्लोक में बताया गया है कि किसी मरूस्थल में यदि भू सतह ऊँट की गर्दन की तरह टेढ़ी दिखाई दे तो उस स्थान पर जमीन के नीचे जल मिलता है, 63वें तथा 64वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि पीलु (पिलुआ या गुडफल) वृक्ष से ईशान कोण में वल्मीक दिखाई दे तो उस वृक्ष से साढ़े चार हाथ पश्चिम पाँच पुरूष की गहराई पर जल की उत्तर वाहिनी शिरा मिलती है। 65वें तथा 66वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि पीलु वृक्ष से पूरब दिशा में वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से चार हाथ दक्षिण दिशा में सात पुरूष की गहराई पर मीठा जल प्राप्त होता है, परन्तु उसके पहले एक पुरूष की गहराई पर खारे जल की दक्षिण वाहिनी शिरा मिलती है। 67वें श्लोक मे बताया गया है कि यदि करील वृक्ष से उत्तर दिशा में वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से साढ़े चार हाथ दक्षिण दस पुरूष नीचे मधुर जल प्राप्त होता है। 68वें श्लोक में बताया गया है कि यदि रोहितक (लाल करंज) वृक्ष के पश्चिम में वल्मीक दिखायी पड़े तो उस वृक्ष से तीन हाथ दक्षिण बारह पुरूष की गहराई पर खारे जल की पश्चिम वाहिनी शिरा मिलती है। 69वें श्लोक में बताया गया है कि यदि अर्जुन वृक्ष से पूरब वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से एक हाथ पश्चिम चौदह पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 70वें तथा 71वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि धतूरे के वृक्ष के उत्तर वल्मीक दिखायी दे तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण पंद्रह पुरूष की गहराई पर खारे जल की दक्षिण वाहिनी शिरा मिलती है।

72वें तथा 73वें श्लोकों में बताया गया है कि वल्मीक बिना भी यदि बेर और लाल करंज इकट्ठे दिखायी दें तो उन वृक्षों से तीन हाथ पश्चिम सोलह पुरूष की गहराई पर मधुर जल प्राप्त होता हैं। 74वें श्लोक में बताया गया है कि यदि करील और बेर के वृक्ष एक साथ दिखायी दें तो उन वृक्षों से तीन हाथ पश्चिम अठारह पुरूष की गहराई पर ईशान कोण वाहिनी प्रचुर जल वाली शिरा मिलती है। 75वें श्लोक में बताया गया है कि यदि पीलु वृक्ष से युक्त बेर का वृक्ष मौजूद हो तो उससे तीन हाथ पूरब

दकार्गलाध्याय के इकतालीसवें एंव बयालीसवें श्लाकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर कपित्थ (कैथ) के वृक्ष से दक्षिण वल्मीक हो तो उस वृक्ष से सात हाथ उत्तर पाँच पुरूष की गहराई पर जल की एक पश्चिम वाहिनी शिरा और एक उत्तर वाहिनी शिरा प्राप्त होती है। तैतांलीसवें तथा चौवालीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि अश्मन्तक वृक्ष के बायें तरफ बेर का वृक्ष या वल्मीक हो तो उस वृक्ष से छः हाथ उत्तर साढ़े तीन पुरूष की गहराई पर जल की दक्षिण वाहिनी शिरा और ईशान वाहिनी शिरा मिलती है। पैतालीसवें एंव छयालीसवें श्लोकों में बताया गया है कि यदि किसी स्थान पर हरिद्र (हलदुआ) के निकट वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ पूरब सवा पाँच पुरूष की गहराई पर जल की पश्चिम वाहिनी तथा दक्षिण वाहिनी शिरायें मिलती हैं।

जिस स्थान पर अर्जुन और बेल के वृक्ष का संयोग हो तो उन वृक्षों से दो हाथ पश्चिम पच्चीस पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है।

बीस पुरूष की गहराई पर कभी नहीं सूखनेवाला खारे जल का स्त्रोत प्राप्त होता है। 76वें श्लोक में बताया गया है कि जिस स्थान पर अर्जुन और करील या अर्जुन और बेल के वृक्ष का संयोग हो तो उन वृक्षों से दो हाथ पश्चिम पच्चीस पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 70वें श्लोक में बताया गया है कि यदि वल्मीक के ऊपर दूब या सफेद कुशा हो तो वल्मीक के नीचे इक्कीस पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 78वें श्लोक में बताया गया है कि जिस स्थान पर कदम्ब और वल्मीक के ऊपर दूब दिखायी दे वहाँ कदम्ब के वृक्ष से दो हाथ दक्षिण 25 पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 79वें एवं 80वें श्लोकों में बताया गया है कि तीन वल्मीक के मध्य में विजातीय तीन प्रकार के वृक्षों से युक्त लाल करंज का वृक्ष हो तो लाल करंज से चार हाथ 16 अंगुल उत्तर 40 पुरूष की गहराई पर जल मिलता है।

81वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ पर अनेक गाँठों से युक्त शमी वृक्ष हो और उसके उत्तर वल्मीक हो तो उस शमी वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम पचास पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 82वें श्लोक में बताया गया है कि यदि एक स्थान में पाँच वल्मीक हो जिनमें बीच का वल्मीक सफेद हो तो उस सफेद वल्मीक से पचपन पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 83वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ पर पलाश (ढाक) के वृक्ष से युक्त शमी वृक्ष हो, वहाँ उन वृक्षों से पाँच हाथ पश्चिम साठ पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 84वें श्लोक में बताया गया है कि जहां वल्मीक से घिरा हुआ सफेद रोहितक वृक्ष हो वहाँ उस वृक्ष से एक हाथ पूरब सत्तर पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। 85वें श्लोक के अनुसार जहाँ सफेद काँटों से युक्त वृक्ष हो वहाँ उस वृक्ष से एक हाथ दक्षिण 75 पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है।

87वें एवं 88वें श्लोकों में बताया गया है कि यदि वल्मीक के ऊपर जामुन, निसोत, मौर्वी, शिशुमारी, सारिवा, शिवा (शमी), श्यामा, वराही, ज्योतिष्मती (मालकाकणी), गरूड़वेगा, सूकरिका, माषपर्णी (मूड़) तथा व्याघ्रपदा जैसी औषधियाँ हो तो वल्मीक से तीन हाथ उत्तर तीन पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। 90वें श्लोक में बताया गया है कि जहाँ तृण वृक्ष वल्मीक गुल्मों (झाड़ी) से रहित एक रंग की जमीन में यदि किसी एक स्थान पर विकार दिखाई दे तो विकार युक्त उस स्थान पर पाँच पुरूष की गहराई पर जल मिलता है। श्लोक संख्या 91वें में बताया गया है कि यदि कहीं चिकनी, नीची, रेतदार और पैर रखने से आवाजयुक्त जमीन दिखाई दे तो उस स्थान पर पाँच पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है। श्लोक संख्या 92 में बताया गया है कि जहाँ स्निग्ध वृक्ष हो वहाँ उन वृक्षों से चार पुरूष नीचे जल होता है। जहाँ बहुत वृक्षों के मध्य में एक विकारयुक्त वृक्ष दिखाई दे वहाँ विकारयुक्त वृक्ष से दक्षिण चार पुरूष नीचे जल प्राप्त होता है। श्लोक संख्या 93 में बताया गया है कि जहाँ जमीन पैर से दब जाय वहाँ डेढ़ पुरूष की गहराई पर जल मिलता है।

निष्कर्ष-बृहत्संहिता में वराहमिहिर द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के आधार पर भूसतह से लगभग 560 फीट की गहराई तक भूमिगत जल की उपस्थिति का अनुमान लगाने की चर्चा की गयी है। इससे निष्कर्ष निकलता है वराहमिहिर के समय में इतनी अधिक गहराई से भी भूमिगत जल को प्राप्त करने की विधि विकसित हो गयी थी। दूसरा गौर करने लायक तथ्य यह है कि चन्द अपवादों को छोड़ कर भूमिगत जल की उपस्थिति की संभावना उन्हीं स्थानों पर बतायी गयी है जहाँ भूसतह पर दीमक की बाम्बी मौजूद रहती है।

अनेक गाँठों से युक्त शमी वृक्ष के उत्तर में वल्मीक हो तो शमी वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम पचास पुरूष की गहराई पर जल प्राप्त होता है।

संपर्क करें
डॉ. विजय कुमार उपाध्याय,
राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी,
केके. सिंह कॉलोनी,
पो. जमगोड़िया, वाया-जाधाडीह,
चास,
जिला-बोकारो, झारखण्ड, पिन कोड-827 013